शोध मंथन Vol. XV No.IV Oct.- Dec. 2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

समकालीन कला में अर्पणा कौर का योगदान

प्राप्तिः 18.10.2024
स्वीकृतः 26.12.2024

93

अनुपमा ठाकुर
शोधार्थी
जे.वी.जैन कॉलेज,
सहारनपुर
ईमेलः anu.tomar1986@gmail.com

सारांश

नारीवादी कला प्रत्येक महिला तथा उसकी पहचान से सम्बन्धित है जो महिला सम्बन्धी चर्चा को वृहद रूप में परिभाषित करती है। यह लेखन ऐसी कला से सम्बन्धित है जो स्त्री की सामाजिक, पारिवारिक एवं आत्मिक द्वन्द्वो का परिणाम है। भारत में स्त्री के पुनर्बल की वृद्धि के लिए स्त्री सम्बन्धी विषयों की ओर आज विशेष रूप से समाज का ध्यान आकर्षित किया जा रहा है। नारी शक्ति को परिभाषित करने सम्बन्धित विषयों पर कला सृजन आज हर ओर निरन्तर गतिमान है। सैंकडो वर्षो की लुप्तता व दासता के बाद स्त्री विषय पर सोचने वाले आज विभिन्न विभागों के विद्वान, लेखक फिल्म निर्माता व कलाकार है जो नारी की पहचान, उसकी स्वतन्त्रता के पुनर्निध तथा उसकी स्वयं की जागृति को दृढता प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

स्वतंत्रता के पश्चात आधुनिक भारतीय कला की एक बड़ी उपलब्धि महिला कलाकारों की बडी संख्या में उपस्थिति रही है।1970–80 के दशकों में स्त्री कलाकारों के एक बडे समूह के आगमन से एक विशेष घटना का सूत्रपात हुआ। इस अवधि में महत्वपूर्ण महिला कलाकार कला परिदृश्य में शामिल हुई वैसे कलाकार तो कलाकार होता है और स्त्री–पुरूष कलाकार जैसी कोटियाँ हेतु न्याय संगत नहीं है। पर सामाजिक सांस्कृतिक परिस्थितियों को ध्यान में रखे तो स्त्री कलाकारों की बडी संख्या में उपस्थिति महत्वपूर्ण हो जाती है। मीरा मुखर्जी,अर्पिता सिंह, अर्पणा कौर अंजली इला मेनन,नलिनी मालिनी, नीलिमा शेख गोगी सरोजपाल, माधवी पारेख,नन्दिनी, रिनी धूमल मीना राय आदि। इस सूची को चित्रकला तथा मूर्तिशिल्प दोनों के सन्दर्भ में और लम्बा किया जा सकता है।

भारतीय कला क्षेत्र जो कि पूर्ण रूप से पुरूष प्रधान रहा है और बहुत कम महिला चित्रकार है जो इस क्षेत्र में अपनी छाप छोड पायी है। ऐसे में कुछ महिला कलाकार ऐसी भी है जो भावी पीढ़ी हेतु इस कटीले परिप्रेक्ष्य को समतल बनाने में लगी हुई है। उनमें से अर्पणा कौर एक वरिष्ठ समकालीन कलाकार है। इनकी चित्रकला को अमृता शेरगिल की चित्रकला का अग्रिम पडाव माना जाता है। इनके चित्रों में नारीवादी दृष्टिकोण को चित्रित किया गया है और भारतीय शहरी संदर्भ में महिलाओं के प्रतिनिधित्व व सशक्तिकरण को

प्रदर्शित किया है। नारीवाद, शहरीकरण, पर्यावरण, राजनीति, आध्यात्मक आदि मुद्दो को इन्होंने अपने चित्रों में विषयों के रूप में लिया है।

मुख्य बिन्दू

समकालीन कलां, महिला चित्रकार, अर्पणा कौर।

अर्पणा कौर का जन्म उपन्यासकार पदमश्री अजीत कौर के घर हुआ था। वह एक सिख परिवार में जन्मी थी तथा धर्म, कला, संगीत का माहौल उन्हें अपने परिवार से मिला था। बचपन से ही इन्हें पेटिंग का शौक था। मात्र 9 वर्ष की आयु में इन्होंने मदर एण्ड डॉटर नामक तैल चित्र बनाया था। प्रारम्भ में इनकी चित्रकला पूर्णतया अमृता शेरगिल से प्रभावित थी। 1974 में इन्हें जर्मन दूतावास द्वारा आयोजित समूह, प्रदर्शनी में एम.एफ.हुसैन, जे0 स्वामीनाथन, परमजीत सिंह व अन्य अनेक प्रसिद्ध कलाकारों के साथ अपने कार्य को प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त हुआ जिसमें इनके कार्य की बहुत सराहना हुई। इनके चित्रों में आध्यात्म व लोक शैली का मिश्रण भी दिखता है। इन्होंने अपने चित्रों में भावी जीवन व परिवेक्षीय घटनाओं को भी प्रदर्शित किया जैसे कि इन्होंने 1984 के सिख विरोधी दंगो, माया त्यागी के बलात्कार व चासनाला खनन आपदा की विधवा स्त्रियों पर चित्रों को एक श्रृंखला बनाई। इन्होंने सामाजिक मुद्दों को भी चित्रित किया। 1970 के दशक में राजनीतिक अशान्ति के दौरान इन्होंने अपने चित्रों में दंगे, बंदूके, कटे सिर, पुलिस वाहन आदि केा चित्रित किया 1980 में प्राकृतिक आपदाओं व मनुष्य द्वारा प्राकृतिक विनाश के आंकडों को चित्रित किया। 1990 में महिला सशक्तिकरण नगरीकरण व कामकाजी महिलाओं का चित्रण किया लोक कला की ओर अपने रूझान के कारण इन्होंने 1999–2000 में वरली व गोदना कलाकारों के साथ मिलकर सहयोगात्मक चित्रण किया। 2001में नेशनल गैलरी आफ मार्डन आर्ट, ललित कला अकादमी व साहित्यकला परिषद के लिए मुख्य सलाहकार की भूमिका अदा की।

1995 में हिरोशिमा संग्रहालय द्वारा आयोजित हिरोशिमा बम विस्फोट की 50वी वर्षगांठ के अवसर पर इन्हें हिरोशिमा के आँसू नामक भित्ति चित्रण हेतु आमन्त्रित किया गया था। अर्पणा कौर कलात्मक क्षेत्र के साथ–साथ सामाजिक कार्यो में भी बढ–चढकर हिस्सा लेती रही है। ललित कला और साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित दक्षिण एशियाई साहित्य महोत्सव का नेतृत्व कर इन्होंने विभिन्न कलात्मक क्षेत्रों को साथ लाने में सहयोग दिया। इसके अतिरिक्त 2010 के राष्ट्र मण्डल खेत्रों के दौरान नई दिल्ली के सिरी के वनीय क्षेत्रों को रेस्तरा बनाने हेतु काटे जाने के विरोध में सफलता पूर्वक रैली करने पर इनकी ख्याति जन साधारण तक पहुंची।

चित्रण के विषय

हर कलाकार की अपनी कला यात्रा होती है। समकालीन कला के क्षेत्र में आज कलाकार अपनी आकांक्षाओं व दृष्टिकोण के अनुसार चित्रण कर रहे हैं। जहाँ रंग आकार सभी में नवीनता का अहसास होता है। सभी कलाकारों की कलासृजन की एक अलग पद्धति होती है। अर्पणा कौर जी इन सभी अपेक्षाओं में एक नवीन तथ्य भी जोडती है वह है कला द्वारा धर्म, आध्यात्म को मानवता, न्यायपूर्णता आदि से जोड़ना। इनकी कला में समय जैसे जटिलतापूर्ण विषय को अत्यन्त सुन्दरतापूर्ण

एवं सहज भाव से प्रदर्शित किया गया है। अर्पणा जी के चित्रों में आप साफ व सहज रूप से सत्य का प्रदर्शन देख सकते है। वह बिना किसी सामाजिक डर अथवा दबाव के अपनी बातों को कला के माध्यम से प्रदर्शित करती है। अर्पणा जी की चार दशक की समृद्ध कला यात्रा को प्रदर्शित करते हुए बैंगलोर की नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट में एक प्रदर्शनी आयोजित की गयी। यही प्रदर्शनी नोएडा के स्वराज आर्ट गैलरी में भी लगी जहाँ इसमें सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अर्पणा जी के चित्रों में विषयों की विविधता है। यह समाज में चारों ओर प्रदर्शित घटनाओं, दृश्यों पर आधारित है, धर्म, आध्यात्म के रूप में नानक श्रृखला, पंजाबी साहित्य को प्रदर्शित करती सोहनी, महिवाल की कहानी, वैश्विक समस्याओं को प्रदर्शित करते हुए हिरोशिमा परमाणु बम पर आधारित चित्रण, बौद्ध की सुन्दरता आदि विभिन्न विषयों को इनकी कलम ने छूकर जीवन्त कर दिया है। अर्पणा जी को 2020 में सर्वश्रेष्ठ महिला कलाकार का पुरस्कार मिला जो मेरे दृष्टिकोण से पहले ही मिल जाना चाहिए था। अर्पणा जी एक सहज व्यक्तित्व की धनी है। अपने किसी साक्षात्कार में अर्पणा जी ने अपने चित्रों के विषय में बताया था।''मेरी कला संवेदना का दायरा थोडा विस्तृत है। मेरे चित्रों की आकृतियाँ मानवतावाद से अनुप्रमाणित है।'' ''मुझे लगता है कि चित्रों में आम आदमी आए और आम आदमी को समर्पित चित्र आम आदमी तक पहुंचे।

अर्पणा जी की मानवाकृतियां भावपूर्ण व सुनियोजित है। मुख्यतः नारी आकृतियाँ गहरी पृष्ठभूमि पर सौन्दर्यपूर्ण परिलक्षित होती है। इनके चित्र पूर्णतः नारी प्रधान नहीं है किन्तु इनमें नारियों की समस्याओं को प्रदर्शित किया गया है जहाँ वे शोषण का विरोध करती है अथवा नारी जीवन की विडम्बनाओं अथवा कार्यो को प्रदर्शित करती है। इनकी ''समय'' नामक श्रृखंला में वाराणसी की विधवा स्त्रियों के जीवन की समस्याओं को प्रदर्शित किया है।''द एम्ब्रायडर चित्र में सिलाई में तल्लीन महिला आकृति बैठी है जबकि ''सोहनी'' चित्र श्रृंखला पंजाबी साहित्य पर आधारित है जिसकी प्रेरणा इन्हें अपनी माता जी द्वारा प्राप्त हुई।

अर्पणा जी के चित्रों में कैंची को प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है कैंची को हमारे समाज में नकारात्मक रूप में माना जाता है। क्योंकि यह काटने का काम करती है जैसा कि हमारे पौराणिक ग्रन्थों में भी वर्णित है कि मृत्यु के समय यमराज जीवन रूपी धागे को कैंची से काट देते हैं। इसके अतिरिक्त बुजुर्ग भी कैंची को अनेक उपमाओं के लिए प्रयोग में लेते हैं। कैंची का प्रयोग अपर्णाजी के अनेक चित्रों में मिलता है। अर्पणा जी के चित्रों में रंग संयोजन अत्यन्त आकर्षक है। गहरी पृष्ठभूमि पर आकृतियाँ अपनी और आकर्षित करती है इसके अतिरिक्त एक ही चित्र में किसी आकृति के दो रूप (विलोम) प्रदर्शित किये गये हैं। जैसे 'प्रकृति' तैल चित्र में जीवन रूपी धागा व मृत्यु रूपी कैंची दोनों बनाये गये हैं। ''ट्री ऑफ सर्फिंग ट्री ऑफ एनलाइटमेन्ट में जीवन के दुख व दुखों से मुक्ति हेतु ज्ञान दोनों का चित्रण है। 'दिन और रात' चित्र में भी उजाला औरअंधेरा दोनो दिखाये गये हैं। 'हार्ट ऑफ डार्कनेस में' अहिंसा रूपी बुद्ध को बीच में बनाकर उनके चारो ओर शस्त्रों को बनाया गया है। अर्पणा जी के चित्रों की पृष्ठभूमि में भी सुन्दर आकृतियों का निर्माण किया गया है जैसे 'द एम्ब्राइडर में नारी आकृति के पीछे खंडहर के समान चित्रण टेराकोटा की रंगीन मुगल युगीन इमारतों के समान प्रतीत होती है। इनके द्वारा अनेक प्रदर्शनियों में अपने कार्यों को प्रदर्शित किया गया।

तकनीकी एवं माध्यम

अर्पणा कौर की चित्रकारी यथार्थवाद से प्रभावित है जिसमें अपने आसपास घटने वाली घटनाएं सामाजिक व सार्वजनिक मुद्दे जनमानस की पीड़ा विशेष कर महिलाओं के प्रति संवेदना मुख्य रूप से उनके चित्रों का विषय रहा है जो पीड़ित व्यक्तियों की स्थिति को उजागर करती है इसके अतिरिक्त भारतीय चित्रण की परंपरागत शैलियों का अंश भी इनकी चित्रकारी में देखने को मिलता है। विशेषकर गोंड, गोदना लघु चित्रकला लोक कला मधुबनी आदि। इनकी माता एक लेखिका है जो पंजाबी में रचनाएं करती हैं। इनके विषयों का प्रभाव अर्पणा कौर पर अत्यधिक पड़ा वह अपनी माता के समान नई वेदना की संवेदना है। संसार को चित्रित करती है उनकी कृतियों में मुख्यतः जल रंग को अच्छे माध्यम में चित्रण है उनके चित्रों में इन्होंने रूपांकन के रूप में 'कैंची' का बहुत अधिक प्रयोग किया है जिनमें अध्यात्मवादी दृष्टिकोण भी दिखाई देता है पंजाबी साहित्य तथा सिख धर्म की धार्मिक कथाओं को भी विषय के रूप में चित्रित किया है। वह लोक कला परंपराओं से बहुत अधिक प्रभावित है तथा समय–समय पर अपने चित्रों में इसका प्रयोग करती रहती है इसके अतिरिक्त वह लोक कलाकारों को भी सहयोग करती रहती है इनके चित्रों में प्रकृति, सोहनी महिवाल, दिन–रात आदि शीर्षकों पर कार्य हुआ है जिनमें मुख्यतः कैनवास पर तेल चित्रण ही मिलता है। आवृत्त तथा विवृत्त दोनों प्रकार की मानवाकृतियों का चित्रण किया है 'द एम्ब्राइडर' नामक चित्र में इन्होंने मुख्य आकृति के रूप में अपनी माता को चित्रित किया जो मध्य भाग में बैठी है। इन्होंने चित्रण के अतिरिक्त भित्ति चित्रण मूर्तियां, पुस्तक चित्र आदि कार्य भी किए हैं, 1979 में माया त्यागी का पुलिस द्वारा बलात्कार के विरोध हेतु 'रक्षक ही भक्षक' शीर्षक से चित्रों की श्रृंखला बनाई थी 1988 में इन्होंने समय नामक कहानी लिखी व प्रकाशित की।

अर्पणा कौर के प्रमुख चित्र

अर्पणा कौर प्रसिद्ध ग्राफिक चित्रकार है। इन्होने सिक्ख समुदाय के धार्मिक विशयों व आध यात्मिकता सम्बन्धी विषयों पर चित्रण किया इनके प्रमुख चित्र इस प्रकार है –

(1) प्रकृति– 2020 में निर्मित यह एक तैल चित्र है जो कैनवास पर निर्मित है। चित्र में प्रकृति का मानवीकरण किया हुआ है तथा जो केन्द्र में स्थित है इनके मध्य में अनेक मानवाकृतियाँ निर्मित हैं। विभिन्न कलात्मक संयोजन व रंग योजना अत्यन्त आकर्षक है।

(2) वेयर ऑर ऑल द सोल्जर्स गॉन– 1984 में निर्मित कैनवास पर तैल रंग में चित्रित इस चित्र में कलाकार ने दिवंगत सेना के सिपाहियों को श्रृद्धांजलि के रूप में प्रस्तुत किया है चित्र का रंग संयोजन लाल व धूमिल रंगों में है जो बलिदान का सूचक है।

(3) बॉडी इज जस्ट ए गारमेन्ट– इस शीर्शक पर अर्पणा जी ने विभिन्न माध्यमों में अनेक चित्रों का निर्माण किया जिन्हें पेस्टल रंगों, तैल रंगों गोचे आर्ट आदि द्वारा बनाया गया। चित्र के माध यम से शरीर की नृवरता को प्रदर्शित किया हुआ है। यह चित्र 1991, 1993, 2005 आदि विभिन्न वर्षो में बनाये।

(4) एम्ब्रॉयडर– 2020 में अपर्णा कौर जी द्वारा बनाए चित्र ''एम्ब्रायडर'' महिलाओं को पारंपरिक घरेलुता की छवि से मुक्त करता है और अपनी परिस्थितियों में कढ़ाई करने में सक्षम

महिलाओं की संभावनाओं का भी बताती है अपर्णा जी के चित्रों में वस्त्र एक आवर्ती विषय के रूप में प्रयुक्त होता है जो महिलाओं की स्थापित छवि को मजबूत भी करता है और उनके कमजोर पक्ष को भी प्रस्तुत करता है।

(5) समय (दिन और रात)– अपर्णा जी अपने आध्यात्मिक व रहस्यात्मक चित्रों के लिए प्रसिद्ध है उनकी चित्र श्रृंखला समय में सभी चित्र दृश्य छवि व प्राकृतिक वातावरण से प्रभावित है। यह एक जटिल विषय है क्योंकि समय को देखना सम्भव नहीं यह अनुभव का विषय है अर्थात इसे जिया जा सकता है तथा महसूस किया जा सकता है अपर्णा जी ने सबसे पहले 1988 में समय शीर्षक श्रृखला में रूपक के रूप में कैंची का चित्रण किया था। यह पहला समय था जब इन्होंने समय की दार्शनिक व आध्यात्मिक व्याख्याओं को चित्रण हेतु प्रयोग किया। जिस प्रकार जीवन रूपी धागे को काटने के लिए यमराज मृत्यु रूपी कैंची का प्रयोग करते हैं अथवा जिस प्रकार एक दर्जी पुराने फटे वस्त्र से फटा हिस्सा कैंची से काटकर अलग कर देता है इन्हीं प्रतिको हेतु अपर्णा जी अपने दार्शनिक चित्रों में कैंची का प्रयोग करती है। अपर्णा जी ने दिन और रात के सांसारिक विषय को भी दर्शनिकता से जोड़कर प्रकाश को शुरुआत उपस्थिति जन्म,आशा का प्रतीक तथा रात को अंत, विहिनता, मृत्यु, निराशा के प्रतीक के रूप में चित्रित किया।

पुरस्कार व सम्मान

अर्पणा कौर जी को प्राप्त पुरस्कार व सम्मान का संक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार है :–

1985 ऑल इण्डिया फाइन आर्ट्स सोसाइटी अवार्ड

2007 टी0के0 पदमिनी अवार्ड, केरल सरकार

2017 बी0सी0 सान्याल अवार्ड

इनके अतिरिक्त ललित कला अकादमी द्वारा त्रिवर्षीय कला सम्मेलन में स्वर्णपदक प्रदान किया गया।

अर्पणा कौर जी भारत की एक विख्यात समकालीन चित्रकार होने के साथ–साथ एक सहृदय एवं भावपूर्ण व्यक्तित्व की भी धनी है।''सादा जीवन उच्च विचार''यह उक्ति अर्पणा जी के लिए ही लिखी गयी प्रतीत होती है। आज के समय में भी अर्पणा जी उन चंद व्यक्तियों में से है जो आपसी मेलजोल, पर्यावरण व मानव के सम्बन्धों तथा जीवन दूसरों पर समर्पित आदि भावों के साथ अग्रसर है। उनका सहज व सरल व्यक्तित्व, बातचीत के तरीके से ही व्यक्ति को प्रभावित कर देता है।

संदर्भ

1 डा0 चतुर्वेदी ममता (2017) समाकलीन भारतीय कलां, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

2 Kapoor, Geeta (1978) Contemperary Indian Artists Vikas Publication.

3 Farooqi, Anis (1986) Indian women Artists, National Gallery of Modern Art

4 website Courapara. Com

5 पत्र एवं पत्रिकाएं